पूरक पाठ्यपुस्तक (कृतिका भाग-1)

इस जल प्रलय में (फणीश्वरनाथ रेणु)

पाठ का सारांश

पटना में बाढ़ का प्रकोप–फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित 'इस जल प्रलय में' नामक पाठ में बाढ़ का वर्णन किया गया है। बाढ़ को लेखक ने जल-प्रलय की संज्ञा दी है। रेणु जी बिहार राज्य की राजधानी पटना में रहते हैं। उनका गाँव ऐसे क्षेत्र में है, जहाँ हर साल पश्चिम, पूरब और दक्षिण की कोसी, पनार, महानंदा और गंगा की बाढ़ से पीड़ित प्राणी शरण लेते हैं। परती भूमि पर गाय, बैल, भैंस तथा बकरों के हज़ारों झुंड देखकर लोग बाढ़ की गंभीरता का अनुमान लगा सकते हैं। रेणु जी तैरना नहीं जानते। वे बाढ़ पर कई बार लेख लिख चुके हैं। पटना नगर में जब सन् 1967 में भयंकर बाढ़ आई थी, तब बाढ़ का पानी राजेंद्रनगर, कंकड़बाग तथा अन्य निचले भागों में भर गया था। लोगों ने घरों में प्रतिदिन के लिए उपयोगी सामग्री एकत्र कर ली थी। सभी लोग बाढ़ के उतरने की प्रतीक्षा करने लगे थे। कभी राजभवन तो कभी मुख्यमंत्री निवास में बाढ़ का पानी घुसने की खबरें आती रहती थीं। कॉफ़ी हाउस में भी पानी आ गया था।

लेखक का बाढ़ का दृश्य देखने के लिए निकलना–रेणु जी एक रिक्शे में अपने एक कवि मित्र के साथ बाढ़ का दृश्य देखने निकले। रास्ते में उन्हें अन्य लोग बाढ़ का दृश्य देखकर लौटते हुए मिले। सभी की एक ही जिज्ञासा थी कि बाढ़ का पानी कहाँ तक आ गया है। रेणु जी का रिक्शा पटना के मशहूर गांधी मैदान पहुँचा। गांधी मैदान में लगी रेलिंग के सहारे बहुत-से लोग खड़े बाढ़ का दृश्य देख रहे थे।

बाढ़ का दृश्य देख लेखक का दुःखी होना–रेणु जी को घूमते-घूमते शाम हो गई। शाम के साढ़े सात का समय हो गया। लोग पान की दुकानों के सामने खड़े होकर समाचार सुनने लगे। पानी आकाशवाणी के स्टूडियो तक जा पहुँचा था। लोग तनाव में तो थे, मगर हँस-बोल रहे थे। केवल रेणु जी का चेहरा ही दुःखी दिखाई देता था। लोग कह रहे थे कि एक बार पटना डूब जाए, तो सब पाप धुल जाएँगे।

नए क्षेत्रों में बाढ़ की संभावना की घोषणा–रेणु जी अपने फ्लैट पर पहुँचे ही थे कि लाउडस्पीकर पर घोषणा करने वाली गाड़ी वहाँ तक आ पहुँची। वह घोषणा कर रही थी–**"भाइयो! ऐसी संभावना है ..... कि बाढ़ का पानी ..... रात्रि के करीब 12 बजे तक ..... लोहानीपुर, कंकड़बाग ..... और राजेंद्रनगर में ..... घुस जाए। अतः आप लोग सावधान हो जाएँ।"** रेणु जी अपने घर में कुक्किंग गैस की स्थिति का पता लगाते हैं। वे सोने का प्रयास करते हैं। उन्हें नींद नहीं आती। वे कुछ लिखना चाहते हैं। उनके मस्तिष्क में पुरानी स्मृतियाँ साकार होने लगती हैं।

मनिहारी की बाढ़ की स्मृति ताज़ा होना–रेणु जी को सन् 1947 की मनिहारी (जिला कटिहार) में आई बाढ़ तथा सन् 1949 में महानंदा नदी के बाढ़ में घिरे वापसी थाना के एक गाँव की स्थिति की स्मृति हो उठी थी। सन् 1967 में बाढ़ का पानी राजेंद्रनगर में भी घुस आया था। तब लोगों ने घबराने की जगह इसका आनंद उठाया था।

लेखक का स्वयं बाढ़ से घिरना–रात ढाई बजे तक पानी नहीं आया। रेणु जी को अपने मित्रों की चिंता हुई कि वे न जाने किस हाल में होंगे। सुबह पाँच बजे पानी आ गया। रेणु जी दौड़कर छत पर चले गए। चारों ओर चीख-पुकार मची हुई थी। बाढ़ का पानी बहुत तेज़ी से बढ़ रहा था। रेणु जी के पास कुछ न था, एक कलम थी, वह भी चोरी चली गई थी।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : बाढ़ की खबर सुनकर लोग किस तरह की तैयारी करने लगे?

उत्तर : बाढ़ की खबर सुनकर लोग घरों में आवश्यक सामग्री जुटाने में लग गए। वे ईंधन, आलू, मोमबत्ती, दियासलाई, सिगरेट, पीने का पानी और दवाइयाँ एकत्र करने लगे।

प्रश्न 2 : बाढ़ की सही जानकारी लेने और बाढ़ का रूप देखने के लिए लेखक क्यों उत्सुक था?

उत्तर : बाढ़ के आने से तरह-तरह की खबरें सुनाई पड़ रही थीं। कभी राजभवन में पानी घुसने या मुख्यमंत्री निवास में पानी घुसने की खबर आती। दोपहर में खबर आई कि गोलघर पानी से घिर गया है। कॉफ़ी हाउस में भी पानी आने का पता चला। लेखक बाढ़ के दृश्य को अपनी आँखों से देखना चाहता था। उसे यह देखने की उत्सुकता थी कि पानी कहाँ तक घुस आया है। लेखक अफ़वाहों पर ध्यान न देकर स्वयं बाढ़ की स्थिति देखना चाहता था।

प्रश्न 3 : सबकी ज़बान पर एक ही जिज्ञासा–"पानी कहाँ तक आ गया है?"–इस कथन से जनसमूह की कौन-सी भावनाएँ व्यक्त होती हैं?

उत्तर : जब लेखक रिक्शे पर बैठकर बाढ़ की दशा की जानकारी लेने के लिए निकला, तब उसने देखा कि लोग पैदल ही पानी देखने जा रहे हैं। उन लोगों की आँखों और ज़बान पर एक ही जिज्ञासा थी–"पानी कहाँ तक आ गया है?" लोगों के मन में बाढ़ की स्थिति से स्वयं अवगत होने की भावना थी। वे जानना चाहते थे कि बाढ़ के पानी ने किस-किस स्थान को डुबो दिया है और यह पानी उनके यहाँ कब तक पहुँच जाएगा। इस जिज्ञासा के पीछे उनकी स्वयं की सुरक्षा की भावना भी छिपी थी कि वे कितने सुरक्षित हैं। उस समय तक वे बाढ़ के पानी से डरे हुए नहीं थे, अपितु बाढ़ के पानी की गति को जानना चाह रहे थे।

प्रश्न 4 : 'मृत्यु का तरल दूत' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर : भयंकर बाढ़ के फेनिल जल को 'मृत्यु का तरल दूत' कहा गया है। जल यद्यपि जीवनदायक होता है, किंतु बाढ़ का यह जल मृत्यु का आमंत्रण लेकर आ रहा था, इसलिए इसे मृत्यु का तरल दूत कहा गया है।

प्रश्न 5 : आपदाओं से निपटने के लिए अपनी तरफ़ से कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर : आपदाओं से निपटने के उपाय यद्यपि आपदा की प्रकृति पर निर्भर होते हैं, किंतु कुछ उपाय ऐसे हैं, जो सभी आपदाओं के संबंध में एकसमान ही होते हैं। आपदाओं से निपटने के लिए सबसे आवश्यक तो यह है कि उनके पूर्वानुमान की घोषणा के लिए एक सटीक तंत्र स्थापित होना चाहिए, जिससे लोग समय रहते अपनी सुरक्षा के उपाय कर सकें। सुरक्षा के उपायों के संबंध में भी संबंधित क्षेत्र के लोगों को जागरूक करने के साथ-साथ उनके सामूहिक प्रशिक्षण की व्यवस्था भी होनी चाहिए। राहत कार्यों के लिए भी पहले से ही सुरक्षा-समितियों का गठन करके आवश्यक उपकरणों और अन्य संसाधनों की व्यवस्था भी करके रखी जानी चाहिए।

प्रश्न 6 : 'ईह! जब दानापुर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए.....अब बूझो!'–इस कथन द्वारा लोगों की किस मानसिकता पर चोट की गई है?

उत्तर : इस कथन द्वारा नगरों में रहने वाले लोगों की इसी स्वार्थी मानसिकता पर चोट की गई है कि जब ग्रामीण क्षेत्र बाढ़ में डूबता है, तब शहर के बाबू लोग उनकी दशा देखने तक नहीं जाते।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 7 : खरीद-बिक्री बंद हो चुकने पर भी पान की बिक्री अचानक क्यों बढ़ गई थी?

उत्तर : बाढ़ आने के कारण दुकानों में हड़बड़ाहट दिखाई देने लगी थी। खरीद-बिक्री बंद हो चुकी थी, मगर पान वालों की बिक्री अचानक बढ़ गई थी। इसका कारण यह था कि लोग पान वालों की दुकान पर लगे रेडियो पर समाचार सुनने खड़े हो जाते थे। ये लोग पान भी खरीदकर खाते थे।

प्रश्न 8 : जब लेखक को यह अहसास हुआ कि उसके इलाके में भी पानी घुसने की संभावना है तो उसने क्या-क्या प्रबंध किए?

उत्तर : जब लेखक को यह लगने लगा कि उसके इलाके में भी पानी घुसने की संभावना है तो उसने एक सप्ताह की मानसिक खुराक अर्थात् पत्र-पत्रिकाएँ, उपन्यास तथा विदेशी भाषा सिखाने वाली किताबें लेने का प्रबंध किया। उसने अपनी गृहस्वामिनी से गैस की स्थिति की जानकारी ली। लेखक ने ईंधन, आलू, मोमबत्ती, दियासलाई, सिगरेट, पीने का पानी और नींद की गोलियों का प्रबंध किया।

प्रश्न 9 : बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में कौन-कौन-सी बीमारियों के फैलने की आशंका रहती है?

उत्तर : बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में हैजा, पेचिश, मलेरिया, टाइफॉइड आदि बीमारियों के फैलने की आशंका रहती है।

प्रश्न 10 : नौजवान के पानी में उतरते ही कुत्ता भी पानी में कूद गया। दोनों ने किन भावनाओं के वशीभूत होकर ऐसा किया?

उत्तर : सन् 1949 की महानंदा की बाढ़ में लेखक नाव में सहायता लेकर एक गाँव में गया था। एक नौजवान अपने कुत्ते को साथ लेकर लेखक की नाव पर चढ़ गया। लेखक बाढ़ग्रस्त क्षेत्र के बीमारों को नाव पर चढ़ाकर कैंप में ले जा रहे थे। डॉक्टर ने कुत्ते के लिए मना किया तो बीमार नौजवान छप-से पानी में उतर गया। वह कुत्ते के बिना जाने को तैयार न था। फिर कुत्ता भी अपने मालिक के पीछे-पीछे पानी में कूद गया। इससे उन दोनों के आपसी प्रेम की भावना का पता चलता है। साथ ही कुत्ते की स्वामिभक्ति की भावना का भी पता चलता है।

प्रश्न 11 : 'अच्छा है, कुछ भी नहीं। कलम थी, वह भी चोरी चली गई। अच्छा है, कुछ नहीं–मेरे पास।'–मूवी कैमरा, टेप रिकॉर्डर आदि की तीव्र उत्कंठा होते हुए भी लेखक ने अंत में उपर्युक्त कथन क्यों कहा?

उत्तर : लेखक ने अंत में यह इसलिए कहा है कि यदि उसके पास मूवी कैमरा या टेप रिकॉर्डर आदि चीज़ें होतीं तो वह इनके द्वारा बाढ़ के दृश्यों को अवश्य उतारता, किंतु यह सब कार्य वह तभी कर सकता था, जब वह स्वयं बाढ़ से सुरक्षित होता। स्वयं बाढ़ से घिरा होने पर तो इन वस्तुओं का उपयोग करना और उन्हें सुरक्षित रख पाना कठिन काम है। ऐसे में व्यक्ति स्वयं को सँभाले या इन उपकरणों को सँभाले, यही एक विकट समस्या होती है। निश्चय ही लेखक इन वस्तुओं को बचाने के स्थान पर स्वयं को बचाने को प्राथमिकता देता और तब इन पर किया गया खर्च व्यर्थ ही जाता। इसीलिए लेखक ने इन वस्तुओं के न होने पर 'अच्छा है, कुछ नहीं मेरे पास' कहकर अपना संतोष व्यक्त किया है।

प्रश्न 12 : आपने भी देखा होगा कि मीडिया द्वारा प्रस्तुत की गई घटनाएँ कई बार समस्याएँ बन जाती हैं, ऐसी किसी घटना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : निश्चित रूप से अनेक बार मीडिया द्वारा प्रस्तुत की गई घटनाएँ समस्या बन जाती हैं और उनका निराकरण अत्यंत दुष्कर हो जाता है। ऐसी ही एक घटना 26 नवंबर, 2008 को मुंबई में आतंकवादी हमले के रूप में मिली। इस हमले का मीडिया ने सीधा प्रसारण किया। टी०वी० चैनलों ने तीन दिन तक इस हमले से संबंधित एक-एक कार्यवाही और क्रिया-कलाप का प्रदर्शन किया, जिसका आतंकवादियों ने भरपूर लाभ उठाया; आतंकवादियों के अन्य साथी हमले के शिकार होटल ताजमहल और ऑबेराय में स्थित आतंकवादियों को मोबाइल द्वारा दिशा-निर्देश देते रहे और उन्हें सुरक्षाबलों की एक-एक गतिविधि से अवगत कराते रहे, जिस कारण इस हमले से निपटने में सुरक्षाबलों को तीन दिन लगे और जान-माल की भी बहुत हानि हुई। यदि मीडिया ने इस हमले का सीधा प्रसारण न किया होता तो इस समस्या से कुछ ही घंटों में निबटा जा सकता था और जान-माल की क्षति को भी कम किया जा सकता था।

प्रश्न 13 : बाढ़ के समय लोग कहाँ जा रहे थे और उनकी ज़बान पर क्या बात थी?

उत्तर : बाढ़ के समय लोग मोटर, स्कूटर, ट्रैक्टर, मोटर साइकिल, ट्रक, टमटम, साइकिल और रिक्शा पर तथा पैदल बाढ़ का पानी देखने जा रहे थे। कुछ लोग पानी देखकर लौट रहे थे। देखने वालों की आँखों में ज़बान पर एक ही जिज्ञासा थी–**"पानी कहाँ तक आ गया है?"**

प्रश्न 14 : बाढ़ देखने जब लेखक गया तो उसने रिक्शे वाले से क्या कहा? रास्ते में लेखक ने बाढ़ का कैसा दृश्य देखा?

उत्तर : लेखक जब बाढ़ देखने रिक्शे से जा रहा था, तो उसने रिक्शे वाले से अनुनय भरे स्वर में कहा—**"लौटा ले भैया। आगे बढ़ने की जरूरत नहीं।"**

रिक्शा मोड़कर लेखक 'अप्सरा' सिनेमा हॉल (सिनेमा-शो बंद) के बगल से गांधी मैदान की ओर चला। पैलेस होटल और इंडियन एयरलाइंस दफ्तर के सामने पानी भर रहा था। पानी की तेज़ धारा पर लाल-हरे 'नियन' विज्ञापनों की परछाइयाँ सैकड़ों रंगीन साँपों की सृष्टि कर रही थीं। गांधी मैदान की रेलिंग के सहारे हज़ारों लोग खड़े देख रहे थे। दशहरा के दिन रामलीला के 'राम' के रथ की प्रतीक्षा में जितने लोग रहते हैं, उससे कम नहीं थे ····· गांधी मैदान के आनंद-उत्सव, सभा-सम्मेलन और खेलकूद की सारी स्मृतियों पर धीरे-धीरे एक गैरिक आवरण आच्छादित हो रहा था। हरियाली पर शनैः शनैः पानी फिरते देखने का अनुभव बिलकुल नया था। इसी बीच एक अधेड़, मुस्टैंड और गँवार जोर-जोर से बोल उठा–**"ईह! जब दानापुर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए ····· अब बूझो!"**

प्रश्न 15 : किस समाचार को सुनकर लेखक का कलेजा धक्क उठा? समाचार का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : लेखक के शहर में बाढ़ आई हुई थी। शाम के साढ़े सात बज चुके थे और आकाशवाणी के पटना-केंद्र से स्थानीय समाचार प्रसारित हो रहे थे। पान की दुकानों के सामने खड़े लोग, चुपचाप कान लगाकर सुन रहे थे...

समाचार प्रसारित हुआ–**"पानी हमारे स्टूडियो की सीढ़ियों तक पहुँच चुका है और किसी भी क्षण स्टूडियो में प्रवेश कर सकता है।"** समाचार दिल दहलाने वाला था। कलेजा धक्क उठा। लेखक के मित्र के चेहरे पर भी आतंक की कई रेखाएँ उभरीं, किंतु लेखक व उनके मित्र तुरंत ही सहज हो गए; यानी चेहरे पर चेष्टा करके सहजता ले आए; क्योंकि लेखक को चारों ओर कहीं कोई परेशान नज़र नहीं आ रहा था। पानी देखकर लौटते हुए लोग आम दिनों की तरह हँस-बोल रहे थे, बल्कि आज कुछ अधिक ही उत्साहित थे। हाँ, दुकानों में थोड़ी हड़बड़ी थी। नीचे के सामान ऊपर किए जा रहे थे। रिक्शा, टमटम, ट्रक और टेम्पो पर सामान लादे जा रहे थे। खरीद-बिक्री बंद हो चुकी थी। पान वालों की बिक्री अचानक बढ़ गई थी। आसन्न संकट से कोई प्राणी आतंकित नहीं दिख रहा था।

प्रश्न 16 : सन् 1949 की महानंदा की बाढ़ के समय लेखक के साथ क्या घटना घटी?

उत्तर : सन् 1949 की महानंदा की बाढ़ से घिरे बापसी थाना के एक गाँव में लेखक राहत लेकर पहुँचे। लेखक की नाव पर रिलीफ़ के डॉक्टर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

साहब थे। गाँव के कई बीमारों को नाव पर चढ़ाकर कैंप में ले जाना था। एक बीमार नौजवान के साथ उसका कुत्ता भी 'कुंई-कुंई' करता हुआ नाव पर चढ़ आया। डॉक्टर साहब कुत्ते को देखकर 'भीषण भयभीत' हो गए और चिल्लाने लगे–''**आ रे! कुकुर नहीं, कुकुर नहीं ····· कुकुर को भगाओ!**'' बीमार नौजवान छप-से पानी में उतर गया–''**हमार कुकुर नहीं जाएगा तो हम हुँ नहीं जाएगा।**'' फिर कुत्ता भी छपाक पानी में गिरा—''**हमारा आदमी नहीं जाएगा तो हम हुँ नहीं जाएगा**'' ····· परमान नदी की बाढ़ में डूबे हुए एक 'मुसहरी' (मुसहरों की बस्ती) में लेखक राहत बाँटने गए। खबर मिली थी वे कई दिनों से मछली और चूहों को झुलसाकर खा रहे हैं। किसी तरह जी रहे हैं, किंतु टोले के पास जब लेखक पहुँचे, तो ढोलक और मंजीरा की आवाज सुनाई पड़ी। जाकर देखा, एक ऊँची जगह 'मचान' बनाकर स्टेज की तरह बनाया गया है। 'बलवाही' नाच हो रहा था। लाल साड़ी पहनकर काला-कलूटा 'नटुआ' दुलहिन का हाव-भाव दिखला रहा था; यानी, वह 'धानी' है। 'घरनी' (धानी) घर छोड़कर मायके भागी जा रही है और उसका घरवाला (पुरुष) उसको मनाकर राह से लौटाने गया है। इस पद के साथ ही ढोलक पर द्रुत ताल बजने लगा—**'धागिड़गिड़-धागिड़गिड़-चकैके चकधुम चकैके चकधुम-चकधुम चकधुम।'**

प्रश्न 17 : लेखक का गाँव कैसे क्षेत्र में था?

उत्तर : लेखक का गाँव ऐसे इलाके में है, जहाँ हर साल पश्चिम, पूरब और दक्षिण की कोसी पनार, महानंदा और गंगा की बाढ़ से पीड़ित प्राणियों के समूह आकर पनाह लेते हैं, सावन-भादों में ट्रेन की खिड़कियों से विशाल और सपाट परती पर गाय, बैल, भैंस, बकरों के हजारों झुंड-मुंड देखकर ही लोग बाढ़ की विभीषिका का अंदाजा लगाते हैं।

प्रश्न 18: जब ढाई बजे तक पानी न आया तो लेखक को क्या लगा?

उत्तर : रात के ढाई बज गए, मगर पानी अब तक नहीं आया। लेखक को लगा कि पानी कहीं अटक गया, अथवा जहाँ तक आना था आकर रुक गया, अथवा तटबंध पर लड़ते हुए इंजीनियरों की जीत हो गई शायद, या कोई दैवी चमत्कार हो गया! नहीं तो पानी कहीं भी जाएगा तो किधर से? रास्ता तो इधर से ही है ·····चारों ब्लॉकों के प्रायः सभी फ्लैटों की रोशनी जल रही थी, बुझ रही थी। सभी जगे हुए थे। कुत्ते रह-रहकर सामूहिक रुदन करते थे और उन्हें रामसिंगार की मंडली डाँटकर चुप करा देती थी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in